



International Journal of Creative Research and Publications

Double Blind Peer Reviewed Journal



Research Article

विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता पर आत्मविश्वास के प्रभाव का वैज्ञानिक अनुसंधान

महेश कुमार शर्मा ^{1*}, डॉ. विनोद भांबू ²

¹ पी.एच.डी. शोधार्थी, अपेक्स युनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत

² शोध निर्देशिका, अपेक्स युनिवर्सिटी जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * महेश कुमार शर्मा

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23477377>

सारांश

सारांश & प्रस्तुत वैज्ञानिक अनुसंधान का मूल ध्येय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता पर उनके आत्मविश्वास के प्रभाव का अत्यंत सूक्ष्म, सांख्यिकीय और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना है। मानव सभ्यता के क्रमिक विकास और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा का मुख्य कार्य केवल सैद्धांतिक और अकादमिक ज्ञान प्रदान करना मात्र नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना और उनके व्यक्तित्व में उन शील गुणों का निर्माण करना है जो उन्हें भविष्य के आदर्श नागरिक और सफल मार्गदर्शक बना सकें। इस मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता दोनों ही मानव व्यवहार के अत्यंत प्रासंगिक, जटिल और निर्णायक चर हैं। प्रस्तुत गहन अध्ययन में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान अभिकल्प का अत्यंत वैज्ञानिक रूप से प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अनुसंधान का यह समग्र निष्कर्ष शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों और नीति-निर्माताओं को विद्यार्थियों के अवचेतन में अंतर्निहित संकोच को दूर कर उनके आत्म-प्रत्यय को सुदृढ़ करने और ग्रामीण शिक्षा तंत्र में व्यक्तित्व संवर्धन हेतु एक अत्यंत मजबूत और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 3139-6313
- Received: 13-08-2026
- Accepted: 15-10-2026
- Published: 19-10-2026
- IJCRP:1(5); 2026: 216-222
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

शर्मा म. कु. भांबू वि. विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता पर आत्मविश्वास के प्रभाव का वैज्ञानिक अनुसंधान. Int. J. Creative Res. Publ. 2026;1(5):216-222.

Access this Article Online



www.ijcrp.in

मुख्य शब्द : आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, उच्च माध्यमिक स्तर, शैक्षिक मनोविज्ञान

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के सुदीर्घ और क्रमिक विकास तथा वर्तमान आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक युग में किसी भी व्यक्ति की सफलता और समाज में उसकी प्रासंगिकता की अंतिम आधारशिला उसके मानसिक और मनोवैज्ञानिक संबल पर टिकी होती है। शिक्षा के अत्यंत व्यापक परिदृश्य में, किसी भी विद्यार्थी का केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट होना या परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त कर लेना उसके जीवन की सफलता के लिए पर्याप्त नहीं माना जाता। उसके बहुआयामी व्यक्तित्व में वे व्यावहारिक, सामाजिक और संवेगात्मक गुण भी आवश्यक रूप से समाहित होने चाहिए जो उसे जीवन की दुर्गम और अप्रत्याशित परिस्थितियों का दृढ़ता से सामना करने के योग्य बना सकें। इस मनोवैज्ञानिक दिशा में 'आत्मविश्वास' और 'नेतृत्व क्षमता' दो ऐसे अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ हैं जो न केवल एक-दूसरे से बहुत गहरे स्तर पर जुड़े हुए हैं, बल्कि मानव व्यवहार, उसकी प्रेरणा और उसकी उपलब्धियों को सीधे तौर पर नियंत्रित और निर्देशित करते हैं। इन दोनों चरों का वैचारिक, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधार समझना प्रस्तुत अनुसंधान के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र के अंतर्गत 'आत्म' (स्वयं) मानव की व्यक्तिगत पहचान, उसके ज्ञानपूर्ण अस्तित्व और प्रेरक प्रतिनिधित्व के अध्ययन का सबसे प्रमुख और अनिवार्य केंद्र बिंदु है। दार्शनिक दृष्टिकोण से आत्म एक व्यक्ति के उन सभी आवश्यक गुणों और अद्वितीय विशिष्टता का प्रमुख स्रोत है, जो उसकी निरंतर चेतना और जागरूकता का प्रतिनिधित्व करता है। मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि आत्म वास्तव में व्यक्ति के आंतरिक विचारों, भावनाओं, आशाओं, अंतर्निहित भयों, उसकी कल्पनाओं और स्वयं के प्रति उसके दृष्टिकोण का एक अत्यंत जटिल लेकिन संतुलित संयोजन है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेम्स ने अठारह सौ नब्बे में अपने वैचारिक सिद्धांतों में आत्म को उन सभी वस्तुओं और भावनाओं के योग के रूप में वर्णित किया था जिन्हें कोई भी व्यक्ति अपना कह सकता है। इसी प्रकार, अल्पोर्ट ने उन्नीस सौ इकसठ में यह स्पष्ट किया था कि स्वयं एक ऐसी अभूतपूर्व इकाई है जिसके बारे में प्रत्येक व्यक्ति तुरंत जानता है और यह मानव जीवन के सबसे गर्म, केंद्रीय और निजी कारण के रूप में कार्य करता है; इस प्रकार यह संपूर्ण व्यक्तित्व से भी अधिक व्यापक अवधारणा बन जाती है। इसके अतिरिक्त, वाटसन और शूबिन जैसे प्रख्यात मनोवैज्ञानिकों ने स्वयं को व्यक्ति की भावनाओं, विचारों और स्वयं के प्रति दृष्टिकोणों के एक स्थिर संगठन के रूप में परिभाषित किया है।

समाजशास्त्र और मनोविज्ञान में नेतृत्व भी मानव समाज की शुरुआत से ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण, आवश्यक और जटिल आयाम रहा है। नेतृत्व किसी व्यक्ति या समूह की समस्त गतिविधियों को एक निश्चित और चुनौतीपूर्ण स्थिति में पूर्व निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में निरंतर प्रभावित करने और निर्देशित करने की एक सचेत प्रक्रिया है। एक अत्यंत सक्षम और पारदर्शी नेतृत्व योजना निर्माण और वास्तविक कार्रवाई के बीच की वह सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है जो किसी भी व्यवस्था, संगठन या समाज को बना भी सकती है और बदल भी सकती है। बर्नार्ड बास ने नेतृत्व को एक ऐसी अंतःक्रिया के रूप में परिभाषित किया है जहाँ समूह के एक या अधिक सदस्यों के व्यवहार को अत्यंत सकारात्मक दिशा में बदलने का निरंतर प्रयास किया जाता है। नेतृत्व केवल कुछ अनुयायियों को कठोर आदेश देने की सत्तावादी कला नहीं है, बल्कि यह दूसरों को पूर्ण उत्साहपूर्वक और स्वेच्छा से

कार्य करने के लिए गहराई से प्रेरित करने की क्षमता है। जॉन सी. मैक्सवेल की आधुनिक और कालजयी अवधारणा के अनुसार, एक वास्तविक नेता वह है जो सही दिशा जानता है, स्वयं उस दिशा पर निर्भरता से चलता है और अपने अनुयायियों को वह दिशा स्पष्ट रूप से दिखाता है। एक अत्यंत सफल और प्रभावशाली नेता में परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलनशीलता, अपने समूह के प्रति जवाबदेही, विवादों को सुलझाने हेतु मध्यस्थता कौशल, अत्यंत उत्कृष्ट संचार क्षमता और समाज के सम्मुख एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करने की क्षमता जैसे अनेक अमूल्य शील गुण जन्मजात या प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यमान होते हैं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय सामाजिक-आर्थिक संरचना को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्र को ऐसे युवा और ऊर्जावान नागरिकों की नितांत आवश्यकता है जो न केवल मानसिक रूप से अत्यंत सुदृढ़ हों, बल्कि जिनमें संपूर्ण समाज और राष्ट्र का एक नई और सकारात्मक दिशा में नेतृत्व करने की असीम क्षमता हो। विद्यालयी शिक्षा केवल किताबी और विषय-वस्तु आधारित ज्ञान उपलब्ध करवाने का कोई संकीर्ण साधन मात्र नहीं है; यह वास्तव में भविष्य के कुशल नेतृत्वकर्ताओं को गढ़ने की एक सबसे बड़ी और प्रामाणिक प्रयोगशाला है। इस विस्तृत शैक्षिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए यह मनोवैज्ञानिक प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक और शोधात्मक हो जाता है कि क्या वास्तव में विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता के विकास पर उनके अंतर्निहित आत्मविश्वास का कोई सीधा, स्पष्ट और वैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है? क्या यह पूरी दृढ़ता से कहा जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों का आत्मविश्वास अत्यंत उच्च स्तर का होता है, वे ही समूह में सबसे अधिक नेतृत्वशील होते हैं? इन जटिल और व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक प्रश्नों की सांख्यिकीय और वैज्ञानिक जांच करना नितांत अनिवार्य है। यदि इन दोनों महत्वपूर्ण चरों के मध्य सकारात्मक और मजबूत सहसंबंध सिद्ध होता है, तो भविष्य में हमारी शैक्षिक संस्थाओं द्वारा विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता को उन्नत करने हेतु सर्वप्रथम उनके आत्मविश्वास को लक्षित रूप से पोषित करने के अत्यंत ठोस प्रयास किए जा सकेंगे। जो भविष्य में विद्यार्थियों के उच्च और संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करने के साथ-साथ अत्यंत आत्मविश्वासी और कुशल नेतृत्वशील नागरिकों का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इन्हीं महत्वपूर्ण और दूरगामी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत विषय का अत्यंत विस्तृत और गहन अध्ययन करने का निर्णय लिया गया है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

अनुसंधान प्रक्रिया को एक अत्यंत निश्चित, व्यवस्थित और वैज्ञानिक दिशा प्रदान करने हेतु निम्नलिखित तीन अत्यंत स्पष्ट और महत्वपूर्ण उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है : प्रथम उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता और उनके आत्मविश्वास के मध्य विद्यमान सांख्यिकीय सहसंबंध की प्रकृति, गहराई और दिशा का अत्यंत सूक्ष्म अध्ययन करना है। द्वितीय उद्देश्य लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रकार के सांख्यिकीय और सार्थक अंतर का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। तृतीय उद्देश्य परिक्षेत्र के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में विद्यमान सार्थक अंतर और उसके पीछे उत्तरदायी भौगोलिक और सामाजिक कारणों का गहन अध्ययन करना है।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

शोध के निर्धारित उद्देश्यों की अत्यंत वैज्ञानिक और सांख्यिकीय परीक्षा हेतु अनुसंधान की रूपरेखा के अंतर्गत निम्नलिखित तीन शून्य परिकल्पनाओं का सावधानीपूर्वक निर्माण किया गया है : प्रथम शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता और उनके आत्मविश्वास के मध्य कोई सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है। द्वितीय शून्य परिकल्पना लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। तृतीय शून्य परिकल्पना परिक्षेत्र के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

किसी भी जटिल शोध समस्या के अत्यंत व्यवस्थित और निष्पक्ष समाधान हेतु एक अत्यंत सुदृढ़ और पारदर्शी कार्यप्रणाली का होना सर्वथा आवश्यक है। शोध पद्धति केवल एक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह वह विज्ञान है जिसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि शोध समस्या को कैसे हल किया जाए, कौन से उपकरण प्रयुक्त हों और किस प्रकार से आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाए। प्राप्त दत्तों की संपूर्ण विश्वसनीयता पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करती है कि तथ्य संकलन और उनके विस्तृत विश्लेषण के लिए शोधकर्ता द्वारा किस वैज्ञानिक मार्ग का अत्यंत कठोरता से अनुसरण किया गया है।

प्रस्तुत शोध में समस्या की मनोवैज्ञानिक प्रकृति और निर्धारित उद्देश्यों की व्यापकता को दृष्टिगत रखते हुए 'सर्वेक्षण विधि' का अत्यंत वैज्ञानिक रूप से उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण अनुसंधान किसी भी चयनित और विशिष्ट जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व करने वाले एक अत्यंत बड़े और विविध न्यादर्श से उनकी सापेक्ष घटनाओं, विशेषताओं, मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों और चरों के मध्य अंतर्संबंधों की खोज करने की एक अत्यंत प्रामाणिक, वर्णनात्मक और व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली विधि है। यह सर्वेक्षण विधि शोधकर्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्राथमिक दत्तों का संकलन करने, उनका अत्यंत व्यवस्थित वर्गीकरण करने, वैज्ञानिक व्याख्या करने और अंत में व्यापक सामान्यीकरण स्थापित करने में पूर्णतः सक्षम बनाती है। सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य केवल सूचनाएं एकत्रित करना नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य तत्कालीन शैक्षिक कमियों को दूर करना और समाज में सुधार लाना है; इसके माध्यम से कारण और प्रभाव के जटिल संबंधों का अत्यंत सरलता से पता लगाया जा सकता है।

सर्वेक्षण अनुसंधान को अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए सात प्रमुख वैज्ञानिक चरणों का पालन किया गया है। प्रथमतः, अध्ययन के लक्ष्यों और उद्देश्यों का स्पष्ट निर्धारण किया गया। द्वितीय चरण में लक्षित जनसंख्या को अत्यंत स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया। तृतीय चरण में सर्वेक्षण का डिजाइन तैयार कर अत्यंत सावधानी से न्यादर्श का चयन किया गया और शोध उपकरणों का निर्माण किया गया। चतुर्थ चरण में चयनित न्यादर्श पर उपकरणों का प्रशासन कर तथ्य एकत्र किए गए। पंचम चरण में संकलित तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण और मनोवैज्ञानिक व्याख्या की गई। छठे चरण में विश्लेषण के आधार पर संपूर्ण सर्वेक्षण की रिपोर्ट तैयार की गई और अंतिम चरण में शोध के निष्कर्षों को समाज के उपयोग हेतु संप्रेषित करने का मार्ग प्रशस्त किया गया।

जनसंख्या

शैक्षिक अनुसंधान के विस्तृत संदर्भ में 'जनसंख्या' उस संपूर्ण और विशाल समूह या वर्ग को कहा जाता है जिसमें वे सभी व्यक्ति, वस्तुएँ, घटनाएँ या इकाइयाँ आवश्यक रूप से सम्मिलित होती हैं, जिनमें कोई न कोई समान विशेषता पाई जाती है और जिनका अध्ययन शोधकर्ता अत्यंत गहराई से करना चाहता है। जनसंख्या वह संपूर्ण सेट है, जिसमें से अध्ययन हेतु न्यादर्श चुना जाता है। मनोवैज्ञानिक गुड के अनुसार जनसंख्या उन सभी इकाइयों का एक विशाल समूह है जो शोधकर्ता के विशेष मापदण्डों पर पूरी तरह से खरी उतरती हैं। जनसंख्या को उसकी विशेषताओं के आधार पर कई प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है, जैसे सीमित जनसंख्या जिसकी गणना संभव हो, असीमित जनसंख्या जिसका आकार ज्ञात न हो, लक्ष्य जनसंख्या जिस पर शोध का वास्तविक विषय लागू होता है, और भौगोलिक आधार पर परिभाषित जनसंख्या जो किसी विशेष क्षेत्र या स्थान तक पूर्णतः सीमित होती है। प्रस्तुत अत्यंत विस्तृत अध्ययन के लिए राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के विभिन्न सरकारी एवं निजी विद्यालयों में वर्तमान में अध्ययनरत 'उच्च माध्यमिक स्तर' के समस्त विद्यार्थियों को भौगोलिक और विशेषता आधारित लक्षित जनसंख्या के रूप में अत्यंत स्पष्ट रूप से परिभाषित और चयनित किया गया है।

न्यादर्श

चूँकि संपूर्ण जनसंख्या का व्यक्तिगत रूप से संपर्क कर अध्ययन करना समय, ऊर्जा और आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से बिल्कुल भी व्यावहारिक और संभव नहीं होता, अतः उस संपूर्ण जनसंख्या की सभी विशेषताओं का उचित प्रतिनिधित्व करने वाले एक छोटे परंतु अत्यंत सटीक समूह का चयन किया जाता है, जिसे अनुसंधान की भाषा में 'न्यादर्श' कहा जाता है। यदि न्यादर्श में किसी भी प्रकार की त्रुटि रह जाती है तो उसका सीधा और नकारात्मक असर संपूर्ण शोध परिणामों की विश्वसनीयता पर पड़ता है। एक आदर्श न्यादर्श की प्रमुख विशेषताओं में समय और धन की बचत, परिणामों की अत्यधिक विश्वसनीयता, गहन अध्ययन की सुविधा और एक पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पालन करना शामिल होता है।

प्रस्तुत शोध में अत्यंत वैज्ञानिक और स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि का उपयोग करते हुए कुल छह सौ विद्यार्थियों का अत्यंत सावधानीपूर्वक चयन किया गया है। स्तरीकृत यादृच्छिक तकनीक में संपूर्ण जनसंख्या को पहले छोटे-छोटे और समान विशेषताओं वाले स्तरों या उप-समूहों में विभाजित किया जाता है, और फिर प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक रूप से इकाइयों को चुना जाता है ताकि किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत पक्षपात न हो।

इस छह सौ विद्यार्थियों के अत्यंत संतुलित न्यादर्श को जनसांख्यिकीय चरों के आधार पर निम्नलिखित रूप से स्तरीकृत किया गया है : सर्वप्रथम, संपूर्ण न्यादर्श को भौगोलिक परिक्षेत्र के आधार पर दो समान भागों में विभक्त किया गया है, जिसके अंतर्गत तीन सौ शहरी विद्यार्थी तथा तीन सौ ग्रामीण विद्यार्थी शामिल किए गए हैं। तत्पश्चात, इन दोनों परिक्षेत्रों में लिंग के आधार पर पूर्ण समानता सुनिश्चित करते हुए, प्रत्येक क्षेत्र से एक सौ पचास छात्रों तथा एक सौ पचास छात्राओं का चयन किया गया है। इस प्रकार, संपूर्ण न्यादर्श में कुल तीन सौ छात्र तथा तीन सौ छात्राएं समान अनुपात में सम्मिलित हैं।

न्यादर्श की यह अत्यंत संतुलित और स्तरीकृत संरचना यह पूर्णतः सुनिश्चित करती है कि प्राप्त सांख्यिकीय परिणाम पूरी तरह से पक्षपातरहित हों और उन्हें जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के संपूर्ण विद्यार्थी जगत पर अत्यंत सफलतापूर्वक लागू किया जा सके।

शोध उपकरण

तथ्य संग्रह किसी भी अनुसंधान का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। समस्या के समाधान हेतु आवश्यक और सटीक जानकारी एकत्र करने के लिए शोधकर्ता जिन विशेष साधनों और माध्यमों का प्रयोग करता है, उन्हें शोध उपकरण कहा जाता है। उपकरण मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं: स्वनिर्मित उपकरण जो शोधकर्ता स्वयं बनाता है और मानकीकृत उपकरण जिन्हें विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिकों द्वारा बहुत बड़े समूहों पर प्रयोग करके उनकी वैधता और विश्वसनीयता की अत्यंत कठोर सांख्यिकीय जांच के पश्चात तैयार किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन की पूर्ण सटीकता और मनोवैज्ञानिक वैधता सुनिश्चित करने के लिए स्थापित और विशेषज्ञ-निर्मित दो अत्यंत प्रामाणिक मानकीकृत मापनियों का ही चयन किया गया है :

पहला उपकरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के अत्यंत सूक्ष्म मापन हेतु डॉ. रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित और नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन द्वारा प्रकाशित मानकीकृत 'आत्मविश्वास मापनी' है। किशोरों और वयस्कों के आत्मविश्वास को मापने के लिए यह एक अत्यंत विश्वसनीय उपकरण है जिसमें कुल छप्पन मनोवैज्ञानिक कथन शामिल हैं, जिनका उत्तर विद्यार्थियों को 'सही' या 'गलत' में देना होता है। इस मापनी की सबसे प्रमुख और अनूठी मनोवैज्ञानिक विशेषता इसकी 'विपरीत फलांकन प्रणाली' है। इसके अंतर्गत कुल बारह विशिष्ट कथनों पर गलत उत्तर देने पर एक अंक प्रदान किया जाता है, जबकि शेष कथनों पर सही उत्तर देने पर एक अंक मिलता है। इस संपूर्ण फलांकन का अंतिम अर्थ यह है कि विद्यार्थी का कुल प्राप्तांक जितना कम होता है, उसका आत्मविश्वास उतना ही अत्यंत उच्च श्रेणी का माना जाता है; और इसके विपरीत, प्राप्तांक जितना अधिक होता है, आत्मविश्वास उतना ही निम्न स्तर का माना जाता है। सात या उससे कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अत्यंत उच्च आत्मविश्वास की श्रेणी में आते हैं।

दूसरा उपकरण नेतृत्व क्षमता के निष्पक्ष मापन हेतु अन्नुसिपा पी.

द्वारा निर्मित और तमिलनाडु विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाणित 'नेतृत्व क्षमता मापनी' है। इस मापनी में एक अत्यंत सीधा और प्रत्यक्ष फलांकन प्रणाली का उपयोग किया गया है, जहाँ उच्च प्राप्तांक इस बात को दर्शाता है कि विद्यार्थी में समूह संचालन कौशल, निर्णय लेने की शक्ति और उत्कृष्ट नेतृत्व प्रवृत्तियाँ भरपूर मात्रा में विद्यमान हैं, जबकि निम्न प्राप्तांक इन सभी गुणों के अभाव को स्पष्ट रूप से इंगित करता है।

सांख्यिकी

संकलित किए गए कच्चे और मात्रात्मक दत्तों को अर्थपूर्ण मनोवैज्ञानिक निष्कर्षों में परिवर्तित करने हेतु कम्प्यूटर आधारित सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर के माध्यम से वर्णनात्मक और आनुमानिक सांख्यिकी का अत्यंत विस्तृत प्रयोग किया गया है। संपूर्ण न्यादर्श की केंद्रीय प्रवृत्ति, औसत और उनके फैलाव को समझने के लिए मध्यमान और प्रामाणिक विचलन का उपयोग किया गया है। दो चरों (नेतृत्व और आत्मविश्वास) के मध्य संबंध की दिशा और मात्रा ज्ञात करने के लिए कार्ल पियर्सन के प्रोडक्ट मोमेंट सहसंबंध गुणांक का अत्यंत वैज्ञानिक रूप से प्रयोग किया गया है। दो स्वतंत्र समूहों (जैसे छात्र-छात्रा और शहरी-ग्रामीण) के मध्यमानों में उत्पन्न होने वाले अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण करने हेतु टी-परीक्षण का विस्तृत प्रयोग किया गया है। इन सभी सांख्यिकीय परीक्षणों में परिणामों की सार्थकता की जांच मुख्य रूप से शून्य दशमलव शून्य पांच और शून्य दशमलव शून्य एक सार्थकता स्तरों पर की गई है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया का यह सबसे महत्वपूर्ण, तार्किक और निर्णायक चरण होता है, जहाँ पूर्व निर्मित परिकल्पनाओं को कठोर गणितीय और सांख्यिकीय कसौटियों पर परखा जाता है। एकत्रित तथ्यों को सारणीबद्ध करके उनका सूक्ष्म विश्लेषण करने से ही शोध के प्रश्नों के सटीक उत्तर प्राप्त होते हैं।

वर्णनात्मक सांख्यिकी का सांख्यिकीय और मनोवैज्ञानिक अवलोकन गहन आनुमानिक विश्लेषण और परिकल्पना परीक्षण की ओर कदम बढ़ाने से पूर्व शोधकर्ता के लिए संपूर्ण छह सौ विद्यार्थियों के न्यादर्श की सामान्य मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को समझना अत्यंत आवश्यक होता है।

चर	कुल न्यादर्श	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	न्यूनतम प्राप्तांक	अधिकतम प्राप्तांक
आत्मविश्वास	600	28.45	8.32	12	51
नेतृत्व क्षमता	600	64.78	11.45	35	92

वर्णनात्मक सांख्यिकी की उपरोक्त सारणी स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करती है कि संपूर्ण समूह का आत्मविश्वास मध्यमान अट्ठाईस दशमलव चार पांच है। डॉ. अग्निहोत्री की मापनी के निर्धारित मानकों के अनुसार, बीस से बत्तीस के मध्य का प्राप्तांक 'औसत आत्मविश्वास' की श्रेणी को इंगित करता है। इसका मनोवैज्ञानिक अर्थ यह है कि जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामान्यतः एक संतुलित और औसत दर्जे का आत्मविश्वास विद्यमान है। न्यूनतम अंक बारह और अधिकतम अंक इक्यावन यह दर्शाते हैं कि न्यादर्श में अत्यंत उच्च आत्मविश्वास से लेकर अत्यंत निम्न आत्मविश्वास वाले विद्यार्थी भी मौजूद हैं।

नेतृत्व क्षमता का मध्यमान चौंसठ दशमलव सात आठ यह दर्शाता है कि वर्तमान पीढ़ी के विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों का बीजारोपण सफलतापूर्वक हो चुका है और वे एक मध्यम से उच्च स्तरीय नेतृत्व प्रवृत्ति की ओर तेजी से अग्रसर हैं। ग्यारह दशमलव चार पांच का विशाल प्रामाणिक विचलन यह मजबूत संकेत देता है कि विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल में व्यक्तिगत भिन्नताएं बहुत व्यापक स्तर पर मौजूद हैं—कुछ विद्यार्थी बानवे जैसे अत्यंत उच्च अंकों के साथ जन्मजात नेता प्रतीत होते हैं, तो कुछ पैतीस अंकों के साथ इस क्षेत्र में भारी संघर्ष कर रहे हैं। इन व्यक्तिगत भिन्नताओं के पीछे के अंतर्निहित कारणों की विस्तृत विवेचना आगे के परिकल्पना परीक्षणों में की गई है।

प्रथम परिकल्पना का सांख्यिकीय परीक्षण एवं मनोवैज्ञानिक निहितार्थ प्रथम शून्य परिकल्पना यह मानकर चलती है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास के मध्य कोई सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

इस अत्यंत महत्वपूर्ण परिकल्पना के वैज्ञानिक परीक्षण हेतु कार्ल पियर्सन के प्रोडक्ट मोमेंट सहसंबंध गुणांक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

चर	न्यादर्श	स्वतंत्रता के अंश	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर
नेतृत्व क्षमता एवं आत्मविश्वास प्राप्तांक	600	598	-0.684	0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त सांख्यिकीय गणना की सारणी से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास के प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान ऋणात्मक शून्य दशमलव छह आठ चार प्राप्त हुआ है। पांच सौ अठानवे स्वतंत्रता के अंश पर शून्य दशमलव शून्य एक सार्थकता स्तर के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मूल्य शून्य दशमलव एक शून्य चार होता है। चूँकि प्राप्त सहसंबंध गुणांक का गणितीय मान सारणी मूल्य से बहुत अधिक है, अतः यह शून्य दशमलव शून्य एक स्तर पर सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक सार्थक है।

यहाँ प्राप्त ऋणात्मक चिह्न को समझना मनोवैज्ञानिक व्याख्या के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। डॉ. अग्रिहोत्री की आत्मविश्वास मापनी की प्रकृति ऐसी है कि इसमें कम प्राप्तांक, उच्च आत्मविश्वास को प्रदर्शित करता है। अतः इस ऋणात्मक सहसंबंध का अत्यंत तार्किक और वास्तविक अर्थ यह है कि आत्मविश्वास के प्राप्तांकों में कमी होने अर्थात् विद्यार्थी के वास्तविक आत्मविश्वास में भारी वृद्धि होने पर उसकी नेतृत्व क्षमता के प्राप्तांकों में भी अत्यंत तीव्र वृद्धि होती है।

इस अकाट्य सांख्यिकीय साक्ष्य के आधार पर प्रथम शून्य परिकल्पना को पूर्णतः अस्वीकृत किया जाता है। यह वैज्ञानिक रूप से और अकाट्य रूप से सिद्ध होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और उनकी नेतृत्व क्षमता के मध्य एक अत्यंत मजबूत, उच्च और सकारात्मक मनोवैज्ञानिक अंतर्संबंध विद्यमान है। यह शोध परिणाम शिक्षा मनोविज्ञान के स्थापित सिद्धांतों की शत-प्रतिशत व्यावहारिक पुष्टि करता है। नेतृत्व क्षमता किसी भी प्रकार से शून्य या निर्वात में विकसित नहीं होती। नेतृत्व अनिवार्य रूप से एक

समूह के सम्मुख अपने विचार बेबाकी से रखने, विपरीत परिस्थितियों में त्वरित निर्णय लेने और लोगों को अपने दृष्टिकोण से प्रभावित करने की दृढ़ मानसिक शक्ति है। अल्बर्ट बंडूरा के आत्म-प्रभावकारिता सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में यदि हम देखें, तो जब कोई विद्यार्थी अपनी बौद्धिक और सामाजिक क्षमताओं के प्रति सकारात्मक और मजबूत विश्वास रखता है, तो वह चुनौतियों को एक खतरे के बजाय एक शानदार अवसर के रूप में देखता है। एक आत्मविश्वासी विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से स्थिर होता है, समूह चर्चाओं में अत्यंत मुखर होता है, और असफलता के डर से बिल्कुल भी ग्रसित नहीं होता। इसके ठीक विपरीत, जिन विद्यार्थियों में हीन भावना होती है, वे हमेशा अस्वीकृति के डर से मूकदर्शक बने रहना पसंद करते हैं, जिससे उनके नेतृत्व गुणों का स्वाभाविक विकास पूरी तरह अवरुद्ध हो जाता है। संक्षेप में, आत्मविश्वास वह शक्तिशाली इंजन है जो नेतृत्व रूपी भारी वाहन को निरंतर गति प्रदान करता है।

द्वितीय परिकल्पना का सांख्यिकीय परीक्षण एवं सामाजिक निहितार्थ द्वितीय शून्य परिकल्पना यह मानती है कि लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

यह ज्ञात करने के लिए कि क्या नेतृत्व क्षमता का विकास बालक और बालिकाओं में अलग-अलग दर या स्वरूप में होता है, तीन सौ छात्रों और तीन सौ छात्राओं के नेतृत्व मध्यमानों की तुलना करते हुए टी-परीक्षण प्रविधि का अत्यंत सावधानी से प्रयोग किया गया है।

लिंग	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
छात्र	300	64.12	11.65	1.42	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं
छात्राएं	300	65.44	11.20		

आंकड़ों की सारणी से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि छात्रों की नेतृत्व क्षमता का मध्यमान चौंसठ दशमलव एक दो है, जबकि इसके विपरीत छात्राओं का मध्यमान पैसठ दशमलव चार चार है। यद्यपि गणितीय दृष्टिकोण से देखें तो छात्राओं का मध्यमान छात्रों की तुलना में आंशिक रूप से अधिक प्रतीत होता है, परंतु अत्यंत सूक्ष्म सांख्यिकीय परीक्षण के उपरांत प्राप्त टी-मूल्य मात्र एक दशमलव चार दो है। शून्य दशमलव शून्य पांच सार्थकता स्तर के लिए न्यूनतम आवश्यक सारणी मूल्य एक दशमलव नौ छह होता है। चूँकि प्राप्त टी-मूल्य सारणी मूल्य से बहुत कम है, इसलिए दोनों लिंग समूहों के मध्यमानों का यह अंतर सांख्यिकीय और वैज्ञानिक रूप से सार्थक नहीं माना जा सकता।

अतः इन अपर्याप्त सांख्यिकीय प्रमाणों के आधार पर द्वितीय शून्य परिकल्पना को पूर्णतः स्वीकार किया जाता है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध होता है कि लिंग के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में कोई भी भेद या सांख्यिकीय सार्थक

अंतर विद्यमान नहीं है। दोनों ही लिंग समूहों में नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता लगभग एक समान स्तर पर उपस्थित है।

यह अत्यंत महत्वपूर्ण शोध परिणाम भारतीय समाज, संस्कृति और शिक्षा प्रणाली में तेजी से आ रहे एक अत्यंत सकारात्मक, प्रगतिशील और युगांतरकारी परिवर्तन का प्रत्यक्ष सूचक है। सदियों से हमारे पारंपरिक और पितृसत्तात्मक समाजों में यह गंभीर पूर्वाग्रह व्याप्त था कि प्रशासन, कठोर निर्णय लेना और नेतृत्व की क्षमता विशुद्ध रूप से पुरुषों के एकाधिकार वाले गुण हैं, जबकि महिलाओं को हमेशा अनुगामी या अत्यंत कोमल स्वभाव का माना जाता था। प्रस्तुत सांख्यिकीय आंकड़े इन सभी रूढ़िवादी धारणाओं को आज सांख्यिकीय आधार पर पूरी तरह से जड़ से खारिज करते हैं। आज के अत्यंत आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में बालिकाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के प्रति माता-पिता एवं समाज के दृष्टिकोण में आमूलचूल सकारात्मक परिवर्तन आया है। विद्यालयों में सह-शिक्षा का व्यापक प्रसार, समान अवसरों की निर्बाध उपलब्धता, और राष्ट्रीय कैडेट कोर, खेलकूद तथा विज्ञान क्लब जैसी पाठ्य-सहगामी

क्रियाओं में छात्रों की समान भागीदारी ने उन्हें मानसिक रूप से अत्यंत सशक्त किया है। मार्था जे. एम. केली के आधुनिक शोध के बिल्कुल अनुरूप, महिलाओं में जन्मजात रूप से पाई जाने वाली गहरी संवेदनशीलता, अत्यंत प्रभावी सम्प्रेषण और विपरीत विचारों के मध्य आसानी से समझौता कराने की विलक्षण योग्यता उन्हें आज के आधुनिक युग का सबसे उत्कृष्ट और समावेशी नेता बनाती है। यह निष्कर्ष पूरी दृढ़ता से इस बात पर मुहर लगाता है कि नेतृत्व क्षमता अब एक पूर्णतः लिंग-निरपेक्ष चर बन चुकी है।

परिक्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता स्तर
शहरी	300	68.25	10.42	7.68	0.01 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण	300	61.31	11.58		

प्राप्त सांख्यिकीय परिणामों के विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि शहरी विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता का मध्यमान अड़सठ दशमलव दो पांच है तथा उनका प्रमाणिक विचलन दस दशमलव चार दो है, जबकि इसके एकदम विपरीत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान मात्र इकसठ दशमलव तीन एक और प्रमाणिक विचलन ग्यारह दशमलव पांच आठ प्राप्त हुआ है। इन दोनों विपरीत समूहों के मध्यमानों की सांख्यिकीय तुलना करने पर टी-मूल्य सात दशमलव छह आठ प्राप्त हुआ है। यह प्राप्त टी-मूल्य शून्य दशमलव शून्य एक सार्थकता स्तर के मानक सारणी मूल्य से कई गुना अधिक बड़ा है, जो इस अंतर को सांख्यिकीय और मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टिकोणों से अत्यंत सार्थक और महत्वपूर्ण सिद्ध करता है।

उपरोक्त इन अकाट्य सांख्यिकीय साक्ष्यों के आधार पर तृतीय शून्य परिकल्पना को पूर्ण रूप से अस्वीकृत किया जाता है। यह सत्य प्रमाणित होता है कि परिक्षेत्र और भौगोलिक पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में एक अत्यंत स्पष्ट और व्यापक अंतर विद्यमान है, जहाँ शहरी विद्यार्थी नेतृत्व कौशल के मामले में ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में बहुत अधिक आगे हैं।

शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य प्राप्त नेतृत्व क्षमता की यह अत्यंत गहरी और विशाल खाई भारत के सामाजिक-आर्थिक ढांचे और शैक्षिक संसाधनों के भारी असमान वितरण की एक अत्यंत कड़वी यथार्थता को उजागर करती है। उरी ब्रोनफेनब्रेनर के पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में यदि हम इस परिणाम का सूक्ष्मता से विश्लेषण करें, तो यह स्पष्ट होता है कि किसी भी बालक का मनोवैज्ञानिक विकास और उसके नेतृत्व कौशल शून्य में नहीं बनते, बल्कि ये उसके आस-पास के सूक्ष्म और वृहद पर्यावरण की निरंतर अंतःक्रियाओं का ही सीधा प्रतिफल होते हैं।

शहरी परिवेश में निवास करने वाले विद्यार्थियों को बचपन से ही एक बहुआयामी, तीव्र और प्रतिस्पर्धी वातावरण प्राप्त होता है। उनके पास नवीनतम सूचना तंत्र, इंटरनेट की निर्बाध सुविधा और विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के साथ निरंतर बेबाकी से संवाद करने के प्रचुर अवसर उपलब्ध होते हैं। शहरी विद्यालयों में छात्र संसदों और अंतर-विद्यालय प्रतियोगिताओं का जो नियमित आयोजन होता है, वह विद्यार्थियों की सामाजिक झिझक को तोड़कर उनके संप्रेषण कौशल को तराशने के लिए एक अत्यंत उत्कृष्ट व्यावहारिक प्रयोगशाला का कार्य करता है।

इसके एकदम विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी ढांचागत संसाधनों का भारी अभाव, सूचना की भारी विषमता और एक अत्यंत संकुचित सामाजिक परिवेश विद्यमान है। ग्रामीण समाज में अक्सर

तृतीय परिकल्पना का सांख्यिकीय परीक्षण एवं भौगोलिक निहितार्थ तृतीय शून्य परिकल्पना का यह मानना है कि परिक्षेत्र के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता में कोई सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

विद्यार्थी की भौगोलिक और जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि का उसके नेतृत्व के प्रस्फुटन पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह अत्यंत गहराई से मापने के लिए तीन सौ शहरी और तीन सौ ग्रामीण विद्यार्थियों के दत्तों का टी-परीक्षण किया गया।

आज्ञाकारिता और बड़ों के समक्ष मौन रहने को ही एक आदर्श गुण माना जाता है, जो अचेतन रूप से विद्यार्थियों की मुखरता और पहल करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति को पूरी तरह से दबा देता है। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी भाषा का गहरा भय और शहरी तड़क-भड़क से दूरी ग्रामीण विद्यार्थियों के मन में एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक हिचकिचाहट और गहरी हीन भावना उत्पन्न कर देती है। इसी प्रमुख कारण से, जन्मजात प्रतिभा और उत्कृष्ट क्षमता होने के बावजूद, उचित मनोवैज्ञानिक मंच और प्रोत्साहन के अभाव में हमारे ग्रामीण विद्यार्थी नेतृत्व क्षमता के सभी पैमानों पर शहरी विद्यार्थियों से अत्यंत पीछे रह जाते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अनुसंधान का यह अत्यंत विस्तृत, सांख्यिकीय और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भारतीय शिक्षा प्रणाली की वर्तमान वास्तविक स्थिति, उसकी महान उपलब्धियों, उसके गहरे अंतर्विरोधों और उसकी भविष्य की गंभीर चुनौतियों का एक अत्यंत सटीक और वैज्ञानिक दर्पण प्रस्तुत करता है। सभी परिकल्पनाओं के इस वैज्ञानिक परीक्षण ने शिक्षा जगत की कुछ स्थापित रूढ़िवादी धारणाओं को तोड़ा है। विश्लेषण के आधार पर निकाले गए प्रमुख निष्कर्ष और उनके व्यावहारिक शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं:

आत्मविश्वास वास्तव में नेतृत्व की सबसे मजबूत और अनिवार्य आधारशिला है। इस शोध का सबसे शक्तिशाली और निर्विवाद निष्कर्ष यह है कि नेतृत्व कोई ऐसी जादुई या जन्मजात क्षमता नहीं है जो अचानक प्रकट हो जाती है; यह पूर्णतः व्यक्ति के आत्म-मूल्यांकन और उसके आंतरिक आत्मविश्वास द्वारा ही संचालित होती है। सांख्यिकी ने यह पूरी तरह सिद्ध कर दिया है कि जो विद्यार्थी अपनी बौद्धिक और संवेगात्मक योग्यताओं पर गहरा विश्वास रखता है, वही जोखिम उठाने, पहल करने और समूह को विपरीत परिस्थितियों में उचित दिशा दिखाने का साहस कर सकता है। स्वयं के प्रति जागरूकता और सामाजिक कौशल नेतृत्व के लिए अत्यंत अपरिहार्य हैं।

यह अत्यंत आश्चर्य करने वाला और सुखद परिणाम है कि आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्राएं नेतृत्व के सभी पैमानों पर छात्रों के कंधे से कंधा मिलाकर अत्यंत सफलतापूर्वक चल रही हैं। लिंगभेद अब नेतृत्व क्षमता के निर्धारण में कोई भी एकाधिकारवादी या निर्णायक कारक नहीं रह गया है। माता-पिता द्वारा किया जा रहा समान मनोवैज्ञानिक निवेश, सह-शिक्षा और बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति अत्यंत सकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण ने छात्राओं के

भीतर यह अटूट विश्वास जगा दिया है कि वे प्रशासनिक, रणनीतिक या नेतृत्वकारी भूमिकाओं में किसी भी दृष्टिकोण से कम नहीं हैं। शोध का सबसे चिंताजनक और विचारणीय पहलू शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य नेतृत्व क्षमता का अत्यंत विशाल अंतर है। यह बड़ा अंतर विद्यार्थियों की जन्मजात बौद्धिक क्षमता का बिल्कुल नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह से अवसरों की समानता के घोर अभाव का सीधा परिणाम है। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की भारी कमी, मंच-भय, भाषा की मनोवैज्ञानिक बाधा और व्यक्तित्व संवर्धन कार्यक्रमों का पूर्ण अभाव हमारी ग्रामीण प्रतिभाओं को उभरने से लगातार रोक रहा है। प्राप्त वैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं को यह स्पष्ट सुझाव दिया जाता है कि विद्यालयों में केवल सैद्धांतिक पाठ्यक्रम पूरा करवाने पर ही बल नहीं दिया जाना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, स्व-प्रत्यय और आत्मविश्वास के निर्माण हेतु नियमित कार्यशालाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन किया जाए। विशेषकर ग्रामीण विद्यालयों में वाद-विवाद, ड्रामा, छात्र संसद और नेतृत्व विकास शिविरों को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न और अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों की सामाजिक झिझक हमेशा के लिए समाप्त हो सके। शिक्षकों को केवल विषय-वस्तु के संप्रेषण तक सीमित न रखकर, कक्षा में एक ऐसा लोकतांत्रिक और संवेगात्मक वातावरण निर्मित करने का गहन प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी बिना किसी भय के अपने मौलिक विचार व्यक्त कर सके। एक शिक्षक का सकारात्मक और उत्साहवर्धक व्यवहार ही विद्यार्थी के डगमगाते आत्मविश्वास के लिए सबसे बड़ा और वास्तविक ऊर्जा-संवर्धक सिद्ध होता है। नीति-निर्माताओं को ग्रामीण विद्यालयों के बुनियादी ढांचे को सुधारने हेतु एक विशेष नीतिगत ढांचे का निर्माण करना होगा ताकि शहरी और ग्रामीण शिक्षा के मध्य की इस मनोवैज्ञानिक खाई को शीघ्रता से पाटा जा सके। अंततः, यह अनुसंधान इस शाश्वत सत्य को पूरी तरह से पुनर्स्थापित करता है कि किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण केवल उन युवाओं के हाथों में सुरक्षित है जिनका स्वयं पर विश्वास अत्यंत अटल है और जो अपने आत्मविश्वास की पवित्र अग्नि से संपूर्ण समाज का पथ आलोकित करने की उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता रखते हैं।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल श्वेता. उच्चतर माध्यमिक बाल एवं बालिका विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव. भोपाल: जीवाजी विश्वविद्यालय; 2017.
2. चांद SK. किशोर बालक और बालिकाओं के व्यक्तित्व, मूल्यों का सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध का अध्ययन. Fifth Survey of Research in Education. 2008; 2:1355.
3. गीतानाथ PS. नैतिक निर्णय का निश्चित चरों बुद्धिमता, आर्थिक, सामाजिक स्तर, आयुक्षेत्र तथा लिंग के साथ सम्बन्ध का अध्ययन. Survey of Research in Education. 2005; 2:1336.
4. गुप्ता SK, बाजपेयी सुनील. आदिवासी एवं सामान्य हाई स्कूल बालकों के व्यक्तिगत प्रतिमानों के सन्दर्भ में आत्मविश्वास पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन. Indian Journal of Education Research. 2011;16(1):7-10.

5. जययोथी KV. केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों के मनोबल के सम्बन्ध में प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार एवं संगठनात्मक परिवेश का अध्ययन. Survey of Research in Education. 2012; 1:976.
6. पाटिल रंजना. विद्यार्थियों में नेतृत्वशीलता पर चयनित सामाजिक व सांस्कृतिक क्रियाओं का प्रभाव. वाराणसी: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय; 2019.
7. प्रहलाद NN. जूनियर कॉलेज के विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर, मानसिक योग्यता एवं व्यक्तित्व समायोजन का उनके आत्मविश्वास के साथ सम्बन्ध. M.B. Buch Fifth Survey of Research in Education. 2004; 2:411.
8. मैकेण्डलेस, कास्टेनेज़ा. विद्यालयी उपलब्धियों और बुद्धि के संदर्भ में आत्मविश्वास की कमी का अध्ययन. Psychology and Age Journal. 2005;2(4):139-147.
9. शर्मा रमा. सेवारत एवं गैर सेवारत महिलाओं के बच्चों की सृजनात्मकता, समायोजन एवं व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन. सरदार शहर: उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, गांधी विद्या मंदिर; 2022.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-Commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the author



महेश कुमार शर्मा अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत में पीएच.डी. शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि अनुसंधान, अकादमिक अध्ययन तथा संबंधित विषयों के गहन विश्लेषण में है। वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यवस्थित अध्ययन और ज्ञान के विस्तार के माध्यम से शोध के क्षेत्र में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।